International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-06-2026, Accepted: 16-07-2026, Published: 31-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 61-63

रेणु के रिपोर्ताज में आंचलिकता: एक अध्ययन

विकास रंजन[1], डॉ रोशन रवि[2]
[1] शोधार्थी, विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर, बिहार भारत
[2] विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, के. डी. एस कॉलेज, गोगरी सह सहायक प्राध्यापक, विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर, बिहार भारत

सारांश
हिंदी साहित्य की कथेतर गद्य विधाओं के अंतर्गत रिपोर्ताज एक अत्यंत महत्वपूर्ण विधा है, जो पत्रकारिता की वस्तुनिष्ठता और साहित्य की कलात्मक संवेदनशीलता के अद्भुत समन्वय से सामाजिक यथार्थ को रूपायित करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के मूर्धन्य आंचलिक रचनाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' के रिपोर्ताज साहित्य में अंतर्निहित आंचलिक चेतना के विविध आयामों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। रेणु ने 'अंचल' को मात्र एक सीमित भौगोलिक सीमा के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत, धड़कती हुई सामाजिक–सांस्कृतिक सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया है। अध्ययन के अंतर्गत उनके प्रमुख रिपोर्ताज संग्रहों—विशेष रूप से 'ऋण जल धन जल' तथा 'नेपाली क्रांति कथा' के पाठ–विश्लेषण के माध्यम से यह रेखांकित किया गया है कि किस प्रकार प्राकृतिक आपदाओं (बाढ़ एवं सूखा) तथा राजनीतिक जन–आंदोलनों के बीच भी अंचल की लोक–संस्कृति, उत्सवधर्मिता, और विशिष्ट भाषाई संरचना अक्षुण्ण बनी रहती है। शोध निष्कर्ष यह प्रतिपादित करता है कि रेणु का रिपोर्ताज लेखन 'परकाया प्रवेश' या किसी तटस्थ पत्रकार की शुष्क रिपोर्टिंग नहीं है, बल्कि वह स्वयं उनके द्वारा गहरे भोगे हुए और स्वानुभूत यथार्थ की एक प्रामाणिक साहित्यिक गवाही है। समकालीन दौर में जहाँ मुख्यधारा का मीडिया जमीनी यथार्थ और लोक–संवेदनाओं से विमुख हो रहा है, वहाँ रेणु का सामाजिक सरोकारों से संपृक्त रिपोर्ताज साहित्य अपनी संवेदनात्मक सघनता के कारण आज भी बेहद प्रासंगिक और दिशा–निर्देशक है।

मूल शब्द: फणीश्वरनाथ 'रेणु', रिपोर्ताज विधा, आंचलिक चेतना, लोक–संस्कृति, कथेतर गद्य, सामाजिक–आर्थिक यथार्थ, स्वानुभूत यथार्थ, भाषिक संरचना।

हिंदी साहित्य की कथेतर विधाओं में रिपोर्ताज एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा है। यह किसी सामाजिक परिस्थिति अथवा ऐतिहासिक परिवेश का तथ्यपरक चित्रण प्रस्तुत करती है। इस विधा में पत्रकारिता की वस्तुनिष्ठता और साहित्य की कलात्मकता का समन्वय होता है [1]। इसी कारण यह विधा सामाजिक यथार्थ की प्रभावशाली अभिव्यक्ति बनती है। गद्य की इन कथेतर विधाओं के ऐतिहासिक विकासक्रम और उनकी शास्त्रीय प्रामाणिकता को स्पष्ट करने में डॉ. नागेन्द्र का इतिहास ग्रंथ एक प्रमुख वैचारिक पीठिका प्रस्तुत करता है [2]।

जब कोई संवेदनशील साहित्यकार किसी घटना के प्रत्यक्ष अनुभव को कलात्मक दृष्टि से व्यक्त करता है, तब वह रचना 'रिपोर्ताज' का रूप ग्रहण कर लेती है [3]। विधा की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए डॉ. रामचंद्र तिवारी लिखते हैं:

"रिपोर्ताज लेखक केवल तटस्थ द्रष्टा या विवरण–लेखक नहीं होता। वह घटना के भीतर प्रवेश करता है, पात्रों के सुख–दुख के साथ तादात्म्य स्थापित करता है और अपनी संवेदनात्मक दृष्टि से उसे एक कालजयी साहित्यिक रूप प्रदान करता है [4]" ।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का रिपोर्ताज–दृष्टिकोण अपने पूर्ववर्तियों से भिन्न है। वे किसी बाहरी पर्यवेक्षक या पत्रकार की तरह घटनाओं का विवरण प्रस्तुत नहीं करते। वे स्वयं उस अंचल के जीवन का अभिन्न अंग बनकर उसे अभिव्यक्त करते हैं। वे स्वयं लिखते हैं कि उनका लिखना भोगे हुए यथार्थ की गवाही है [5]।

आंचलिक साहित्य की मूल विशेषताओं में विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र का प्रामाणिक चित्रण प्रमुख है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' के रिपोर्ताजों में यह विशेषता अत्यंत प्रभावशाली रूप में दिखती है। उनके रिपोर्ताज संग्रह 'ऋण जल धन जल' में बिहार की कोसी, गंगा तथा पुनपुन नदियों के कछारी क्षेत्रों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है [5]। रेणु का यह चित्रण मात्र दृश्य विवरण नहीं है, बल्कि वह 1950 के दशक के ग्रामीण–आंचलिक परिदृश्य को एक जीवंत ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दस्तावेज के रूप में संचित करता है [6]।

बाढ़ के जलस्तर में निरंतर वृद्धि और अंचल में फैलते भय को रेखांकित करते हुए रेणु लिखते हैं: "चारों ओर शोर, कोलाहल, कलकल, चीख–पुकार और पानी का भीतर ही भीतर रेंगना... पानी का रंग मटमैला–हल्का पीला है, मानो किसी विशाल नाग की जीभ लपलपा रही हो [5]."

नावों की लंबी कतारें और आपदा के बीच लोगों की तात्कालिक प्रतिक्रिया विभीषिका को जीवंत कर देती है। इस संकट में ऊँचे बाँधों पर शरण लेने को विवश मनुष्यों और मवेशियों की लाचारी का मार्मिक चित्रण मिलता है [5]। इन विवरणों के माध्यम से रेणु केवल प्राकृतिक आपदा का विवरण प्रस्तुत नहीं करते। वे उस अंचल के सामाजिक जीवन, आर्थिक संकट और मानवीय संघर्ष को भी उद्घाटित करते हैं।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के रिपोर्ताज साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में उनकी भाषाई संरचना और स्थानीय बोली का सृजनात्मक प्रयोग है। उन्होंने मानक अथवा परिनिष्ठित हिंदी तक स्वयं को सीमित न रखकर मैथिली, मगही, भोजपुरी तथा अन्य स्थानीय बोलियों, देशज शब्दों और लोक–प्रचलित कहावतों का अत्यंत स्वाभाविक एवं प्रभावपूर्ण प्रयोग किया है [5]।

भूख, लाचारी और आपदा के समय की बेबसी को व्यक्त करती अंचल की भाषा का उदाहरण देते हुए वे लिखते हैं: ष्तीन–तीन दिन पर हमन कै एकगो रोटी न मिले [5]"।

यही भाषाई विविधता उनके रिपोर्ताजों को जीवन के अधिक निकट और विश्वसनीय बनाती है। उनके लेखन में पशुओं को हाँकने की आवाजें, मल्लाहों की पुकार, लोक–जीवन से जुड़े संबोधन तथा संकटग्रस्त लोगों की करुण पुकार जैसी लोक–ध्वनियाँ केवल भाषाई अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे उस अंचल की सांस्कृतिक स्मृति, सामाजिक जीवन और सामूहिक अनुभव की सजीव अभिव्यक्ति बन जाती हैं [1]। परिणामस्वरूप,

उनके रिपोर्ताजों का गद्य आंचलिक संगीतात्मकता, सहजता और जीवंतता से परिपूर्ण हो उठता है [7]।

'रेणु' के रिपोर्ताजों में लोक–संस्कृति आंचलिक जीवन का मूल आधार है। उनके लिए आंचलिकता केवल भौगोलिक सीमा या स्थानीय भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि लोक–जीवन की सांस्कृतिक परंपराओं, सामुदायिक जीवन–मूल्यों तथा उत्सवधर्मिता से भी निर्मित होती है। यही कारण है कि घोर प्राकृतिक आपदाओं और विपरीत परिस्थितियों में भी अंचल के लोग अपनी सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक जीवन–ऊर्जा को बनाए रखते हैं।

'ऋण जल धन जल' में रेणु बाढ़ से घिरे ऊँचे टीलों पर एकत्रित लोगों द्वारा 'भटियाली' और 'बिरहा' जैसे लोकगीतों के गायन का उल्लेख करते हैं, जो विपत्ति के बीच भी सामूहिक साहस और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक है [5]। वे लोक–गीत की पंक्तियों को उद्धृत करते हुए लिखते हैं: "कासी फूटल कसामल रे दैवा [5]"

इसी प्रकार मुसहर टोली के लोगों का कीचड़ और जलभराव के बीच नृत्य–गान के माध्यम से अपने दुःख को कम करने का प्रयास यह दर्शाता है कि लोक–संस्कृति संकट की परिस्थितियों में भी जीवन के प्रति आशा और जिजीविषा को बनाए रखने की शक्ति प्रदान करती है। इस जीवंतता को रेखांकित करते हुए वे लिखते हैं:

"कीचड़ और पानी से लथपथ पैर, लेकिन ढोलक की थाप पड़ते ही सब कुछ भूल जाते हैं। 'कासी फूटल कसामल रे दैवा' की तान पर जब मुसहर टोली के युवा थिरकने लगते हैं, तो ऐसा लगता है मानो प्रकृति की इस विभीषिका को चुनौती दे रहे हों। यह मनोरंजन नहीं, जीवित रहने की सामूहिक हुंकार है [5]" ।

रेणु के अनुसार, आपदा के समय ढोलक की थाप, लोक–गीत और सामूहिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक एकता, मानसिक संबल तथा सामुदायिक चेतना के महत्वपूर्ण आधार हैं [5]।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के रिपोर्ताजों में आंचलिक जीवन का चित्रण किसी आदर्शवादी अथवा रोमानी दृष्टिकोण से नहीं किया गया है, बल्कि उसके सामाजिक–आर्थिक यथार्थ को पूरी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। उनका अंचल भूख, गरीबी, बीमारी, विस्थापन, सामंती शोषण तथा सामाजिक विषमता जैसी अनेक समस्याओं से जूझता हुआ दिखाई देता है [1]। रेणु अपने रिपोर्ताजों में ग्रामीण समाज की वर्गीय एवं जातीय संरचना का यथार्थपरक चित्रण करते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि प्राकृतिक आपदाओं का सबसे अधिक दुष्प्रभाव समाज के आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वंचित वर्गों पर पड़ता है।

'एकलव्य के नोट्स' तथा 'श्रुत–अश्रुत पूर्व' के संदर्भ में राहत कार्यों और सरकारी संसाधनों पर प्रभावशाली एवं उच्चवर्गीय लोगों के नियंत्रण तथा हाशिए के समाज की बेबसी को उजागर करते हुए वे लिखते हैं:

"राहत के चावल की बोरियाँ जब जमींदार के गोदाम की ओर मुड़ जाती हैं, तो अंचल का गरीब सिर्फ आसमान की तरफ देखता है। बाढ़ सबके लिए आती है, लेकिन उसका दर्द और भूख सिर्फ फटेहाल मुसहरों और मजदूरों के हिस्से ही आती है [8]"।

इस प्रकार रेणु सामाजिक विषमता, वर्गीय वर्चस्व तथा प्रशासनिक असमानताओं को केवल घटनाओं के रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उनके कारण उत्पन्न मानवीय पीड़ा, अन्याय और शोषण की संरचनात्मक वास्तविकताओं को भी उजागर करते हैं। अतः उनके रिपोर्ताजों में सामाजिक–आर्थिक यथार्थ केवल आंचलिक जीवन का दस्तावेज नहीं है, बल्कि सामाजिक चेतना, वर्गीय असमानता तथा मानवीय गरिमा के पक्ष में एक सशक्त वैचारिक हस्तक्षेप के रूप में उभरता है [3]।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के रिपोर्ताजों का फलक केवल प्राकृतिक आपदाओं अथवा ग्रामीण जीवन के चित्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि उनमें राजनीतिक चेतना, जन–संघर्ष और लोकतांत्रिक मूल्यों की भी सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है [1]। उनके लिए आंचलिकता का अर्थ केवल किसी भौगोलिक क्षेत्र का वर्णन नहीं, बल्कि वहाँ के लोगों की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सक्रियता का यथार्थपरक चित्रण भी है। 'नेपाली क्रांति कथा' में रेणु नेपाल के राणाशाही–विरोधी आंदोलन तथा भारत–नेपाल सीमा से जुड़े अंचलों के लोगों की सक्रिय राजनीतिक भागीदारी का सजीव एवं प्रामाणिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं [9]।

इस आंदोलन में आम जनता और मजदूर वर्ग की आजादी की तड़प को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं: ष्क्रांति सिर्फ काठमांडू के महलों को हिलाने के लिए नहीं थी, यह विराटनगर के जूट मिल मजदूरों और सीमा पर पहरा देते उस आम इंसान की आँखों का सपना था, जो बंधनों को तोड़कर आजाद हवा में सांस लेना चाहता था [9]" ।

इस रिपोर्ताज में सीमावर्ती जनजीवन, स्वतंत्रता की आकांक्षा और जन–संघर्ष का ऐसा चित्रण मिलता है, जिससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक परिवर्तन केवल सत्ता–परिवर्तन का प्रश्न नहीं, बल्कि आम जनता की सामूहिक चेतना और सहभागिता का परिणाम होता है। यहाँ आंचलिकता अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से जुड़ने के बावजूद अपनी स्थानीय जड़ों से विच्छिन्न नहीं होती [4]।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के रिपोर्ताजों की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में उनकी गहरी मानवीय संवेदना तथा यथार्थपरक पात्र–योजना प्रमुख है। उनके रिपोर्ताजों में कोई एक पारंपरिक नायक नहीं होता, बल्कि पूरा अंचल और वहाँ का जनसमुदाय सामूहिक रूप से नायक की भूमिका निभाता है ख1,। यह सामूहिक नायकत्व रेणु की लोकतांत्रिक एवं मानवीय दृष्टि का परिचायक है, जिसमें सामान्य जन का संघर्ष और साहस साहित्य का केंद्र बन जाता है।

इसके साथ ही वे अनेक छोटे–छोटे किंतु प्रभावशाली वास्तविक पात्रों का चित्रण करते हैं, जो विपरीत परिस्थितियों में भी अदम्य साहस, मानवीय करुणा और जिजीविषा का परिचय देते हैं [3]। उदाहरणस्वरूप, बाढ़ के दौरान अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों की सहायता करने वाले केवट की निःस्वार्थ सेवा–भावना को रेखांकित करते हुए वे लिखते हैं:

"कुछ चाहिए? रोटी–पानी? ... माझी की आवाज इस प्रलयंकारी सन्नाटे में जीवन का संदेश लेकर आती है। अपनी फटी नाव और टूटे पतवार के सहारे वह केवल बाढ़ पीड़ितों को सुरक्षित स्थान पर ही नहीं पहुँचा रहा था, बल्कि इंसानियत के प्रति बुझते हुए भरोसे को भी बचा रहा था [5]"।

ऐसे पात्रों के माध्यम से रेणु यह स्थापित करते हैं कि असाधारण मानवीय गुण सामान्य जनजीवन में भी विद्यमान होते हैं। यही कारण है कि उनके रिपोर्ताजों में पात्र केवल घटनाओं के सहभागी नहीं रहते, बल्कि मानवीय संवेदना, सामाजिक उत्तरदायित्व और लोकजीवन की नैतिक शक्ति के प्रतिनिधि बन जाते हैं।

निष्कष

प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' के रिपोर्ताज साहित्य में आंचलिकता केवल किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र का चित्रण नहीं है। वह लोक–संस्कृति, भाषाई विविधता, सामाजिक–आर्थिक यथार्थ, राजनीतिक चेतना तथा मानवीय संवेदना के समन्वित रूप में अभिव्यक्त होती है । रेणु ने रिपोर्ताज विधा को मात्र घटनाओं के तथ्यात्मक विवरण तक सीमित न रखकर उसे साहित्यिक संवेदना, सामाजिक प्रतिबद्धता और लोकजीवन के जीवंत अनुभवों

से समृद्ध किया। उनके रिपोर्ताजों में अंचल केवल कथा की पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह एक सक्रिय सांस्कृतिक एवं सामाजिक सत्ता के रूप में उपस्थित होता है, जिसके माध्यम से सामान्य जनजीवन के संघर्ष, आशा, जिजीविषा और मानवीय गरिमा का प्रभावशाली चित्रण सामने आता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि रेणु के रिपोर्ताज हिंदी साहित्य में पत्रकारिता और साहित्य के सृजनात्मक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। जहाँ तथ्य और संवेदना परस्पर पूरक बनकर सामाजिक यथार्थ को अधिक प्रामाणिक एवं प्रभावी रूप में अभिव्यक्त करते हैं। आज के दौर में जहाँ समकालीन पत्रकारिता और मीडिया में कई बार जमीनी यथार्थ तथा लोक–संवेदनाओं का अभाव देखा जाता है, वहाँ रेणु का रिपोर्ताज साहित्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक सरोकार वाली पत्रकारिता के लिए भी एक आदर्श मार्गदर्शक के रूप में प्रासंगिक है।

सुझाव:

1. **शैक्षणिक समावेशन:** विश्वविद्यालयों के हिंदी पाठ्यक्रमों में रेणु के उपन्यासों के साथ उनके रिपोर्ताज संग्रहों को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि गद्य शिल्प के समग्र रूप का अध्ययन हो सके।

2. **संवेदनात्मक आपदा–पत्रकारिता:** वर्तमान दौर की मुख्यधारा की आपदा रिपोर्टिंग में आ रहे संवेदनात्मक ह्रास को सुधारने के लिए रेणु के कथेतर लेखन को एक प्रामाणिक श्केस स्टडीश के रूप में पत्रकारिता के छात्रों को पढ़ाया जाना चाहिए।

3. **लुप्तप्राय मौखिक लोक–तत्त्वों का संरक्षण:** रेणु के रिपोर्ताज में अंकित लोकगीतों, अंचलों की विधाओं और आंचलिक देशज शब्दों का सांस्कृतिक प्रलेखन और संरक्षण किया जाना आवश्यक है।

4. **तुलनात्मक शोध का विस्तार:** समकालीन कथेतर गद्य लेखकों (जैसे रांगेय राघव) के साथ रेणु के रिपोर्ताज शिल्पों का व्यापक तुलनात्मक विश्लेषण किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. (2018). हिन्दी गद्य: विन्यास और विकास. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन. (पृ. 145–168)
2. नागेन्द्र, डॉ. (संपादक). (2020). हिन्दी साहित्य का इतिहास (73वाँ संस्करण). नई दिल्ली: मयूर पेपरबैक्स. (पृ. 612–635)
3. वर्मा, धीरेंद्र (संपादक). (2013). साहित्य कोश (भाग–1). वाराणसी: ज्ञानमंडल. (पृ. 412–415)
4. तिवारी, रामचंद्र. (2014). हिन्दी का गद्य साहित्य (संशोधित संस्करण). वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन. (पृ. 520–542)
5. रेणु, फणीश्वरनाथ. (1977). ऋण जल धन जल. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (पृ. 34–52)
6. झा, सदन. (2015). "विजुअलाइजिंग ए रीजन: फणीश्वरनाथ रेणु एंड द आर्काइव ऑफ द रीजनल–रूरल इन द 1950"- (पृ. 45–62)
7. यायावर, भारत. (2021). फणीश्वरनाथ रेणु: कथा का नया स्वर. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. (पृ. 112–134)
8. यायावर, भारत (संपादक). (1991). समय की शिला पर (रेणु के कथेतर गद्य संकलन). नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन. (पृ. 85–110)
9. रेणु, फणीश्वरनाथ. (1978). नेपाली क्रान्ति कथा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (पृ. 12–28)